मंदोदरी

मंदोदरी

डॉ. आभा पूर्वे

अंगिका संसद
सराय, भागलपुर

ISBN : ९७८.८१.९६१४४६.१.६

प्रथम संस्करण
ई. २०११

द्वितीय संस्करण
२०२३

सर्वाधिकार ©
लेखिकाधीन

प्रकाशक
अंगिका संसद
सराय, भागलपुर
(बिहार)-८१२ ००२
E-mail : angikasansad@gmail.com

हरियाणा कार्यालय
वार्ड-३३, सेक्टर-२८
सरस्वती विहार, गुरूग्राम-१२२००२

आवरण-चित्र
www.wallpapercave.com से साभार

मुद्रक
Das Printer
गोविंदपुरी, दिल्ली।

मूल्य
पचास रूपये मात्र

Mandodari (Poem)
By Dr.Abha Purbey Rs.50/-

माय

जीवनलता पूर्वे

कें

जे हमरों व्यक्तित्व कें गढ़ै में

आय तांय तन-मन लगैतें रहलों छै

—आभा

पहलों संस्करण सें

पुरोवाक्

ई तैहाकरों बात छेकै जबें अंगिका के महाकवि सुमन सूरो जी जीत्तों छेलै । हुनी जबें भी भागलपुर आबै तें हमरा कन जरूर आबै । एक दाफी हुनी आपनों प्रबन्ध काव्य 'सती परीक्षा' के पाठ सौंसे करलें छेलै । हमरी माय कें ऊ काव्य एतन्है अच्छा लागलों छेलै कि हुनकों गेला के बाद माय नें हमरा सें कहलें छेलै कि तोरहो हेने कोय काव्य लिखना चाहियौ, राम आकि सीता पर । बात ऐलों गेलों होय गेलै । आबें तें सुमन सूरो जी भी नै छै । एक दाफी हुनका सें माय के बात बतैनें छेलियै, तें हुनी कहलें छेलै कि अच्छा होतौं तोहें मन्दोदरी पर कोय काव्य लिखों ।

मन्दोदरी पर हमरा की सामग्री मिलतियै । बाल्मीकि रामायण में एकरों जे चरित्र छै ऊ सचमुच में बहुत बढ़िया छै । बाद में हम्में डॉ. अमरेन्द्र जी सें मनों के बात बतैलियै तें हुनी कहलकै तोहें विजेता मुदगलपुरी सें सम्पर्क करों, हुनिये सामग्री दियें पारौक । सचमुचे में विजेता जी सें सामग्री मिललै आरो मनों के ऊ इच्छा पूरा होय गेलै । लेकिन जेन्हों चाहै छेलियै होनों नै होलै । सोचै छियै मन्दोदरी पर फेनू सें लिखबै । लेकिन जे लिखलें छियै ऊ तोरा सिनी के हाथों में सौंपी रहलों छियौं ।

—आभा पूर्वे
१ दिसम्बर २०११

शरतचंद पथ
मशाकचक, भागलपुर
८१२००१ बिहार

दूसरों संस्करण लेली

—आभा पूर्वे
होली
८ अक्टूबर २०२३

मन्दोदरी

आय तोंय ने छों
तें ई लंका
केन्हो ँ सुनशान
वीरान बनी गेलों छै;
सरंग छूतें हजारों हजार हवेली में
जेना कोय आदमिये ने रहें।

सोना के राजमार्ग
सोना के रास्ता
सोना के घाट
सोना के सीढ़ी
सोना के बन्दनवार
सब बेकार
करिया अन्हार;
जेना
ऊ महावली के जलैलों लंका
हठासिये जागी उठलों रहें
जेकरा तोहें
राते-रात पहले नाँखि गढ़वाय देलें छेलौ।
आय वही
सोना के लंका

फेनू केन्हों कारों करिया
बनी गेलों छै ।

सरंगों कें छूतें
हमरों ई राजहवेली
आइयो होने कें छै
वहाँ रं हजार-हजार परिचारिका
राज हवेली के बाहरो
हमरों आदेश पावै लें
बेकल,
हजारों-हजार सेविका
कहीं कोय कमी नै
कमी छै
तें एक बस तोरे
जेकरा बिना की लंका
की शृंगार
सौंसे जिनगिये भार ।

स्वर्ण मंजूषा में ढकी कें
तोरों वहा चट्टान नाँखि देह
आबें चट्टान के नीचें
राखी देलों गेलों छै
कोय कालमात्र नाँखि,
जेकरा आबें
नै देखें पारतै
कोय देवता
कोय दानव
कोय दैत्य
कोय असुर
कोय आर्य

सबसें अलग
शान्त चित्त नाँखि
अदृश्य काल नाँखि
तोहें सुती गेलों छों
पर्वत के हृदय में
हेनों कि
कालो वहाँ तक
ने पावें पारें
केकरो कल्पनो तांय
नै पहुँचें पारें।
तबें
ई मन्दोदरिये के पहुँच
केना हुएँ पारतै वहाँ तांय !

कत्तो चाही कें
कुछ नै करें पारौं
बस यही हुएँ पारें
कि हम्में हुमड़तें रहौं
तोरा लें, जिनगी भरी
जिनगी के बादो
—दूसरों जिनगी
तेसरों-चौथों जिनगी तांय ।

आय हमरो ँ पास
हजारो-हजार परिचारिका छै
मतरकि नै छै
तें एक तोहें
आरो हमरों बाबू
दानव कुलोदभव मय
जे आपनों बुढ़ारियों में

हजार सैनिक के ताकत
असकल्ले राखै छैलै
हुनकों हौ तेज छेलै।
आरो हमरों तोरा पावै के कांक्षा ही छेलै
कि हुनी गेलों छैलै
दानवेन्द्र मकराक्ष के सम्मुख
बस यही एकटा निवेदन लेलें
कि छौड़ी दौ
रक्षधिय वैश्रवण रावण कें
कैन्हें कि हमरों बेरी मंदोदरीं
मानी लेलें छै मनेमन
हिनका आपनों पति ।
मतरकि दानवेन्द्र मकराक्ष
कहाँ तैयार होलों छेलै
ई वास्तें,
बस एतन्है हमरों बाबू से
कहलें छेलै,
''रावण तें हमरों जल देवता लेली
बलि पशु छेकै
एकरों आइये बलि पड़तै
देवता खुश होतै,
देवता खुश होतै तें
हमरों प्रजा खुश होतै,
हमरों सुम्बा द्वीप खुश होतै
हम्में रावण कें नै छोड़ें पारौं
बस पुरोहित के
आबै भर के देर छै ।''

फेनू व्यंग्य सें
हमरों बाबू दिश देखतें कहलें छेलै

''रुकी जा, दनुपुत्र मय'
रक्षधि पति वैश्रवण रावण के पाविये कें जइयों
बलिभाग पाविये कें जइयों
आरों साथ-साथ ई
दैत्यपुत्री के बलि भागो
लेलें जइयों
मन्दोदरी कें दै दियौ
शायद देवता प्रसन्न होय जाय,
तें रावणो से बढ़िया पति
प्राप्त होय जैतै ।
ऊ रक्षाधिप कें
आपनों पति की बनैवों
जे दानवेन्द्र मकराक्षण
के प्राण चाहें;
दानव-वंश के घाती छेकै,
आरो ई सब जानतौ
दनुपुत्र मय
तोहें राक्षस कें
आपनों बेटी के स्वामी
बनाबै लें चाहै छों ।
धिक्कार छौं तोरा
तोहें दानव नै
राक्षस छों राक्षस ।
आरो राक्षस लें हमरो पास
एक दण्ड छै
जे ई वैश्रवण रावण कें
अभी-अभी मिलना छै ।''

तबें हमरों बाबू
कुछ नै बोलें पारलों छेलै

कैन्हैं कि हुनको सामना में
हमरों कठुवैलों मुँह
घूमी गेलों छेलै,
हुनी लौटी ऐलों छेलै
आरो आपनों ताकतों पर
जौरों करलें छेलै
हजारो योद्धा कें
दानवेन्द्र के विरुद्ध
आरो बलिस्तूप के चारो दिस
हठासिये जुटी ऐलों छेलै
काटी देलें छेलै
हमरों भावी पति के
सब बन्धन
कहाँ से आवी गेलों छै
हौ ताकत ।
हमरों बाबू के देहों में !

एक दिश
हमरों बाबू आपनों सेना लै
दानवेन्द्र के सेना साथें
लड़ी रहलों छेलै
दूसरो दिश
दानवेन्द्र मकराक्ष साथें
वाश्रवण रावण
हमरों होयवाला पति।
अद्‌भुत-अद्‌भुत
रक्षांधिप के हौ तेज
हौ वीरता,
आय तांय नै देखलें छेलां ।

दानवेन्द्र
जेकरों देहों में
तीनों लोक के ताकत
बसै छेलै,
ऊ रणभूमि में
छटपटाय कें
गिरी पड़लों छेलै
रक्षाधिप के प्रहार सें।
दानवेन्द्र मकराक्ष के मुँह से
निकली रहलों छेलै
प्राण के पिटारा
विलीन होय गेलों छेलै
हवा, पानी, आकाश, माँटी
आरो आगिन में ।
यैमें कांही कोय झूठ नै
हम्में देखलें छियै
आपनों आँखी सें
हौ सबटा दिरीश,
महाकाल जेन्हों नाचतें
मुनिपुत्र वैश्रवण रावण कें
तभिये तें
जखनी हमरों बाबू
हमरा लें जाय रहलों छेलै
राक्षाधिप के सम्मुख,
हमरों मनों में
केन्हों उछाह छेलै
जना हमरों गोड़ों में
सौ-सौ पंख लागी गेलों रहें,
हुलसली-हुलसली
पहुँची गेलों छेलियै

रक्षाधिप के सामना;
किशोर मनों के उछाह कें
केन्हौं नै
रोकें पारलें छेलै
हमरों लाज आरो लेहाज ।
आरो वहा दिन
हम्में जानें पारलें छेलियै
आपनों जन्म-कथा
कि के छेकै मन्दोदरी ?
के छेली हमरी माय ?
कत्तें दुखी छै हमरों बाबू !
केकरों दोष ?
हमरी माय के
आकि हमरों बाबू के ही ?
नै, नै
हमरी मैये कहीं-न-कहीं
दोखी छेलै।
आखिर
एत्तें स्वेच्छचारिता
एत्तें देहों के वशीभूत रहबा
मर्यादा के रोआं रोआं कें
दुखैवै ही तें छेकै।

नै समझें पारलकी
हमरी मांय
कि सब्भे स्वतंत्रता के
एक सीमा होय छै
जेकरों बाहर जैथैं
स्वतंत्रतो
कलुषित होय जाय छै

ई बात मांय बुझियो जैतियै
जों ऊ दानव वंश के होतियै
दानव कुल
जेकरों मर्यादा
बात-व्यवहार
चाल-चलन
रीति-रिवाज
रूप-शृंगार
सौंसे दुनियाँ में अद्‌भुत छै,
नै करै पारें
कोय्यों जाति
एकरों बराबरी
है हमरों घमण्ड नै
जलदेवता के अलकापुरियो
एकरों चर्चा सें अघावै छै।

हमरी माय
सुम्बा द्वीप के होतियै
दानव-वंश के बेटी होतियै
तें की
हेने करतियै ?
हमरी माय तें
अप्सरा कुल के छेली
देवता के देलों दान
तभिये तें
चौदह साल साथ रहियो कें
छोड़ी गेलै बाबू के साथ
हमरों जन्म होलाहौ के बाद ।

ऊ नारी

सचमुचे में अप्सराहै कुल के होय छै
जे देह के वशीभुत होय
भटकै छै जहाँ-जहाँ
नै मन वश में
नै विचार वश में
नै निष्ठा वश में
भोग के मुर्त्ती बनी भटकें
तें अप्सरे नी छेकै,
ऊ कोय हुएँ
हमरी माय हेने कैन्हे नी !

माय कहाँ समझलकी
बाबू के मनों के बात
छोड़ी गेली
आरो बसी गेली जल देवता के घोंर
हाही के कभियो, काहूँ सद्गति नै छै ।

यहें हाही
आवी गेलों छेलै
हमरों पति रक्षधिप में
ऊ चाहें जनानी में रहें
कि पुरुख में
दोख तें
दोनों कें लागै छै।
हमरी मांय तें खुद्दे
जलदेव के घरों में जाय बसली
आरो रक्षाधिप
उठाय लै आनलकै
दूसरा के जनानी
आर्यकुल शिरोमणि के जनानी सीताहै कें

देह के ई इच्छा के
जे दुर्गति होना छेलै
ऊ तें होइये कें रहलै
कत्तें मना करलें छेलियै
नै लड़ों आर्यकुल सें
हम्में जानै छियै आर्यकुल कें
कैन्हें कि आर्यकुल तें
हमरे बंधु-बान्धव छेकै;

मतरकि
रक्षाधिप केना सहतियै—
वंश के बात छेलै
कुल के बात छेलै
आर्य आरो रक्ष के बात छेलै।
जबें आदमी के बीच
जाति, वंश, कुल, धर्म
आवी जाय छै
तबें देश झुलसै छै
सोना नगरिये नै
प्रजा झुलसै छै
राजाहै के प्राण नै जाय छै
स्त्री के गोद उजड़ै छै
ओकरों 'सुहाग' जरै छै
ओकरों देह के लूट-पाट होय छै।

युद्ध के आग बुझला के बादो
आय केन्हों लागै छै, लंका
जेना श्मशान जागी गेलों रहें
मतरकि
काहीं कोय योगी नै

खाली भूत-बैताल के छाया
आरो हड्डी-पंजर के अंबार
जेना काल
सब्भे कें चबाय
चली देलें रहें
एक हमरा अकेलों छोड़ी कें।

हजारो-हजार ई परिचारिका
सेविका
सब भूत-बैताल के छाया नांखि
डोलै छै हमरों आगू-पीछू
आरो हमरों रक्षाधिप
सुती रहलों छै
हमेशा लेली आँख मुनी कें
नीलम के चट्टान के नीचें।

महाकाल कें प्राप्त
हमरों रक्षाधिप
ओत्तें-ओत्तें लड़ाय के बादो
की तोहें ने समझें पारलौ
कि युद्ध
आदमी कें कुछ नै दिएँ पारें
खाली महाविनाश के
ई बात नै दानवेन्द्र के मालूम छेलै
नै रक्षाधिप कें
तभिये तें
सुम्बा के उजड़ी गेलों छेलै
सुख-भाग।

हाय हमरों मातृभुमि के सुख-भाग

जेकरों स्मृति अभियो मन-प्राण कें
हिलकोरी दै छै
सुम्बा के सोना
हीरा-जवाहरात
मोती-माणिक
गाछ-बिरिछ
समुद्र आरो लहर
सब अभियो होने होतै
मतरकि नै जानौं
ऊ युद्ध के बाद
आबें वहां करों आदमी केन्हों होतै ?
होन्हे होतै
जेना कि ई लंका के छै
जे जहाँ बचलों छै
बिना प्राण के डोलते पुतला ।

के छेकै एकरो दोखी ?
सोचै छियै
तें जी बेकल होय जाय छै।

ऊ दिन
जबें रक्षाधिप के निष्प्राण देह
हमरों सम्मुख लानलों गेलै,
हठासिये केन्हों
हहरी उठलों छेलै हमरों प्राण
जेना माघ-फागुन के
हरहरैतें डाल-पात

कत्तें फूटी-फूटी कें
कानलों छेलियै हम्में

ई कही-कही
कि ‘‘हे राक्षसेश्वर
तोरा, युद्ध करे के पहिले
समझैलें छेलियौं
कि तोहें ऊ आर्यपुत्र सें नै लड़ों
जे मन-प्राण सें
आपनों स्त्री कें चाहै छै
कहिनें कि ओकरों देहों में
ओकरों स्त्री
अदम्य मन-प्राण नाँखी बहतें रहै छै
ओकरा युद्ध में
के हरावें पारें !
हे लंकाधिपति
तोरा लें एक हम्मीं मन्दोदरी होतियौं
तें हमरों बात जरूरे मानतियौ
नै मानलौ; ठानलौ युद्ध
की होलै ?
जे शरीर कें देखी
यमराजो कें भय छेलै
वही शरीर पर
डोले छेलै यम के प्रेत
सोना से लदलों देह
मांटी आरो रेत!

आय एक हम्मी नै
कै-कै मन्दोदरी
हतभागिन बनलों
आपनों-आपनों सोना के हवेली में
बंदी छै,
युद्ध के दुख तें जनानिये जानै छै ।

ऊ दिन
जबें हम्में हजार तीर सें बिंधलों
तोरों शरीर कें देखलें छेलियौं
जना साही के शरीर रहें
तें हमरा हठासिये
ख्याल आवी गेलों छेलै
तोरों वहा बलिष्ठ देह
जेकरों गर्दन पर
दस हीरा के माला
हेने शोभै छेलै
जेना तोरों दस शीश रहें;
प्रतिबिम्ब
जना प्रतिबिम्ब नै रहें
विरोधी, मूड़िये समझी कें
काटें
दस शीश ।

के बतैलें छेलै
आर्यकुल श्रेष्ठ राम कें ई बात ?

आय तोहें हमरों पास नै छों
तें याद आवै छै
ऊ मधुयामिनी के बात
हमरों रूप
हमरों शृंगार
हमरों हास-परिहास
के अनन्य प्रशंसक
तोहें केना
काल के शिकार होय गेलौ ?
धरती पर

के छेलै तोरा नाँखी पराक्रमी
तपी, ऐश्वर्यवान
आर्यपुत्र सें कैन्हों कें कम नै
जो कमी छेलौं
तें यहें कि–
भोगे तोरों लें जीवन छेलौं
सब तोरों लें
तोरा सम्मुख कोय कांही नै,
तही तें तोरा लें
नै कुबेर छेलौं
नै विभीषण।

आबें लोगें जे कहों
कि विभीषण कुलघाती छेलै
आरो कुबेर दंभी
खोजला सें तें सबमें
कुछ-न-कुछ दोख
मिलिये जाय छै।

देवताओ के दुख
अलोपित होय जाय छै
जो ओकरों व्यवहार
स्त्री के प्रति वाम नै होय छै
हे लंकाधिपति
सब इन्द्रिय सें विरत होलौ पर
तोहें मानों नै मानों
तोरों ई चूक
तोरा लें महाकाल बनी गेलै।

आबें हमरों लें

ई सोना के लंका में
छेवे की करै
हमरा लें,
नै हमरों दियोर
नै ननद
नै भैसुर
न सेविका
नै परिचारिका
कोय कुछ नै।

कोय कुछ हुवौ नै पारें
देश-देश सें
लूटी कें लानलों गेलों
ई अपार धन
सोना
चांदी
हीरा-जवाहरात
की लंका के लब्बों अधिपति कें
ललचैतै नै
नया लंकेश्वर कोय्यो बनें
विभीषण
आकि कुबेर
फेनू होतै स्त्री आरो सम्पत लें युद्ध ।

अपार धन आरो वैभव के मोह
भला केकरौ चित्त कें
शांत रहै दै वाला छै की ?
वहू में
जे देशों में
किसिम-किसिम के लोग बसें

कोय दैन्य कुल के
कोय असुर कुल के
कोय दानव कुल के
सब-के-सब
बनैलों गेलों बन्दी;
भला की सोचतै
ई देश के हित।

बान्ही-छान्ही कें बनैलों
भला के भगत बनलों छै !
एक लंकेश्वर की मरलै
दूसरों
लंकेश्वर होय लें तनलों छै,
आरो फेनू
जे जहाँ बचलों छै
जोंन-जोंन सोना के हवेली में
दिवंगत लंकेश्वर के
विधवा रानी सब,
सब बनी जैतै
देखतें-देखतें
नया लंकेश्वर के रानी
युग-युग के कहानी ।

हमरा नै रहना छै
ई वैभव-विलास के
माया नगरी में
जहाँ आदमी के धर्म सें बढ़ी कें
आदमी के वैभव छै
आदमी के ताकत छै
जहाँ दास आरो स्त्री

एक्के रं मानलों जाय,
बात-बात पर
ओकरों ऊपर
मुक्का तानलों जाय;
वहाँ आरो सब के वास हुएँ पारें
आत्मा केना बसतै ।

हमरों देश
हमरों दानव बंधु !
जेहनों दिव्य देह
होने मोंन आरो मस्तिक !
जेकरों नै तें
ज्ञान के बराबरी
नै विचार के
नै संस्कृति के
नै संस्कार के
नै व्यवहार के !

फूल के सुगन्ध सें
बेकल हुवै वाला दानव
फूले जकां मोंन राखै वाला दानव
फूले लें सोचै वाला
हमरों द्वीपवासी
संगीत आरो नृत्य में रमै वाला
हमरों देशवासी !
अमृत के वाणी पैलें छै
हमरों सुम्बा !
आय लागै छै
कत्तें युग बीती गेलै
आपनों देश देखलों होलों।

आह
हमरों देश
हमरों द्वीप
हमरों सुम्बा
जहांकरों राजो
विपत्ति पड़ला पर
सैनिक साथें युद्ध करें पारें
आपने नै
पड़ोसी देशो लें
मरें-खपें पारें,
जहांकरों बूढ़ों-बाप
बेटी लें
सब दुख सहें पारें,
युद्ध करें पारें
आरो शांति सें मरें पारें !

वहा देश में
हम्में लौटी जैबै
वहांकरों पछुवा हवा
हमरा बुलाबै छै
खेत-खलिहान में अनाज ओसैतें
दानव कन्या के हँसी हंकाबै छै
जेना
जोर-जोर सें
हंकैतें रहें समुद्र के शोर
लहरों के संगीत अछोर
खुली कें खेलै लें
हांसै लें
नाचै लें
ऊ आत्मा नांखि

जे राजसी-तामसी बन्धन से
मुक्त हुऍं ।

होन्हौं कें आबें
हमरों लें की बचलों छै ई लंका में
जिनगी कथी लें काटबों
शंका में
सहमी-सहमी कें
डरी-डरी कें
जीते जी मरी-मरी कें।

हमरों ऊ विश्वास तें
वहा दिन मरी चुकलों छै
जबें हम्में देखलें छेलियै
तीनो लोक
तीनो देवता
तीनो शक्ति कें
भयभीत करै वाला
की रं लहू सें लथपथ छेलै;
जे भुजा पर
हमरा ओतना विश्वास छेलै
ऊ टुकड़ा-टुकड़ा में
कहाँ-कहाँ गिरलों छेलै
नै जानौ
तबें हम्में सपनौ में
नै सोचलें छेलियै
कि मृत्यु
समय पुरला पर
केकरो नै छोड़ै छै
नै देवता के

नै दानव के
तबें रक्षाधिपे के केना छोडतियै ।

अच्छा होतै
कि आरो कोय विश्वास
हमरों साथ छोड़ी दें
नीलम चट्टानों के नीचें
चिर निद्रा में सुतलों
हे हमरों प्राण
हम्में क्षमा चाहै छी ।

■■

डॉ. अमरेन्द्र
लाल खां दरगाह लेन,
सराय, भागलपुर,
८१२००२ (बिहार)

आभा जी,

मैंने 'मन्दोदरी' की पांडुलिपि पढ़ी । लम्बी कविता के रूप में यह लघु प्रबन्ध ही है । आपने मन्दोदरी के बहाने जिस तरह से युद्ध, स्त्री, देश और जाति समस्या पर विचार कर लिया है, उससे तो इस लघु प्रबन्ध की गरिमा ही बढ़ गयी है । 'मन्दोदरी' काव्य का यह आन्तरिक संसार बाहरी संसार के लिए बड़ा उपयोगी सिद्ध होगा, ऐसा मेरा विश्वास है । और ऐसे ही काव्यःसृजन से अंगिका का भी मान बढ़ेगा । इस सुन्दर लघु कृति के लिए आपको बधाई ।

—अमरेन्द्र
२ अक्टूबर २०११

आभा पूर्वे : एक संक्षिप्त परिचय

जन्म तिथि : २३ अक्टूबर १९६४ ई.

जन्म स्थान : भागलपुर

माता का नाम : जीवनलता पूर्वे

पिता का नाम : रूद्रदत्त पूर्वे

शिक्षा : एम.ए.(गोल्ड मेडल), पी-एचडी

प्रकाशन : देश भर की विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में रचनाएँ प्रकाशित

संकलनों में रचनाएँ : चम्पा फूलै डारे डार, आधुनिक अंगिका काव्य कोश, हे दशरथ के राम आदि दर्जनाधिक संकलनों में रचनाएँ प्रकाशित

सम्पादन : 'नया हस्तक्षेप' (अनियमितकालीन पत्रिका) के अलावा १. गीत-गंगा (अंगिका गीत संग्रह), २. नवगीतकार मधुसूदन साहा, ३. अर्द्धनारीश्वर (हिन्दी कहानियों का पंजाबी अनुवाद), ४. जीवनलता पूर्वे : शांत नदी की अनंत यात्रा (अंग महिला साहित्यकार संसद, भागलपुर) ५. अंगिका लोकसाहित्य : एक अध्ययन (अंगिका संसद, भागलपुर), ६. केकरों चाँद केन्हों चाँद (अंगिका संसद, भागलपुर), ७. खोई हुई लड़की का खत (अंगिका संसद, भागलपुर), ८. डॉ. अमरेन्द्र : व्यक्तित्व और वागर्थ (कामायनी, भागलपुर), ९. डॉ. अमरेन्द्र : संदर्भ और साहित्य (समीक्षा प्रकाशन, दिल्ली)

प्रकाशित पुस्तकें : १. अंतहीन वैतरणी (अंगिका उपन्यास), २. गुलबिया (अंगिका उपन्यास), ३. कुँवर विजयमल (हिन्दी उपन्यास), ४. चन्दन जल न जाए (कहानी-संग्रह), ५. शरीष की सुधा (कहानी-संग्रह), ६. जब-जब झरे शृंगार (दोहा-संग्रह), ७. गुलमोहर का गाँव (कविता-संग्रह), ८. नागफनी के फूल (गजल-संग्रह), ९. शिशिर की धूप (कविता संग्रह), १०. नमामि गंगे (कविता-संग्रह), ११. ताँका शतक, १२. मंदोदरी (अंगिका प्रबंध काव्य)

~~सम्पर्क~~मंदोदरी : शरतचंद पथ, मशाकचक, भागलपुर (बिहार)